



Akash Giri

28 Jun 1996

03:45 PM

Shamli

Model: Web-MyKundli

Order No: 120973401

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग _____: पुल्लिंग
जन्म तिथि _____: 28/06/1996
दिन _____: शुक्रवार
जन्म समय _____: 15:45:00 घंटे
इष्ट _____: 25:53:21 घटी
स्थान _____: Shamli
राज्य _____: Uttar Pradesh
देश _____: India

अक्षांश _____: 29:27:00 उत्तर
रेखांश _____: 77:18:00 पूर्व
मध्य रेखांश _____: 82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार _____: -00:20:48 घंटे
ग्रीष्म संस्कार _____: 00:00:00 घंटे
स्थानिक समय _____: 15:24:12 घंटे
वेलान्तर _____: -00:03:15 घंटे
साम्पातिक काल _____: 09:51:21 घंटे
सूर्योदय _____: 05:23:39 घंटे
सूर्यास्त _____: 19:24:22 घंटे
दिनमान _____: 14:00:43 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन) _____: दक्षिणायन
सूर्य स्थिति(गोल) _____: उत्तर
ऋतु _____: वर्षा
सूर्य के अंश _____: 13:10:44 मिथुन
लग्न के अंश _____: 26:05:17 तुला

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति _____: तुला - शुक्र
राशि-स्वामी _____: वृश्चिक - मंगल
नक्षत्र-चरण _____: अनुराधा - 1
नक्षत्र स्वामी _____: शनि
योग _____: साध्य
करण _____: बालव
गण _____: देव
योनि _____: मृग
नाड़ी _____: मध्य
वर्ण _____: विप्र
वश्य _____: कीटक
वर्ग _____: सर्प
युँजा _____: मध्य
हंसक _____: जल
जन्म नामाक्षर _____: ना-नवीन
पाया(राशि-नक्षत्र) _____: रजत - ताम्र
सूर्य राशि(पाश्चात्य) _____: कर्क

पंचांग

दादा का नाम _____ :
पिता का नाम _____ :
माता का नाम _____ :
जाति _____ :
गोत्र _____ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1918	आषाढ़	7
पंजाबी	संवत : 2053	आषाढ़	15
बंगाली	सन् : 1403	आषाढ़	14
तमिल	संवत : 2053	आनी	14
केरल	कोल्लम : 1171	मिथुनम	14
नेपाली	संवत : 2053	आषाढ़	15
चैत्रादि	संवत : 2053	आषाढ़	शुक्ल 12
कार्तिकादि	संवत : 2053	आषाढ़	शुक्ल 12

पंचांग

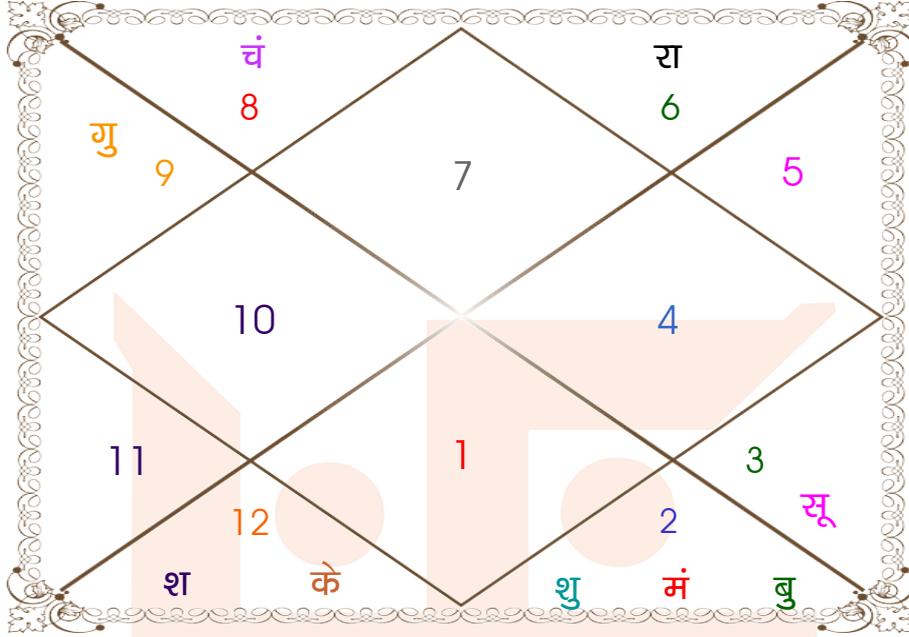
सूर्योदय कालीन तिथि _____ : 12
तिथि समाप्ति काल _____ : 19:24:39
जन्म तिथि _____ : 12
सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____ : विशाखा
नक्षत्र समाप्ति काल _____ : 12:43:10 घंटे
जन्म योग _____ : अनुराधा
सूर्योदय कालीन योग _____ : साध्य
योग समाप्ति काल _____ : 23:36:04 घंटे
जन्म योग _____ : साध्य
सूर्योदय कालीन करण _____ : बव
करण समाप्ति काल _____ : 08:36:02 घंटे
जन्म करण _____ : बालव
भयात _____ : 07:34:34
भभोग _____ : 55:18:50
भोग्य दशा काल _____ : शनि 16 वर्ष 5 मा 5 दि

घात चक्र

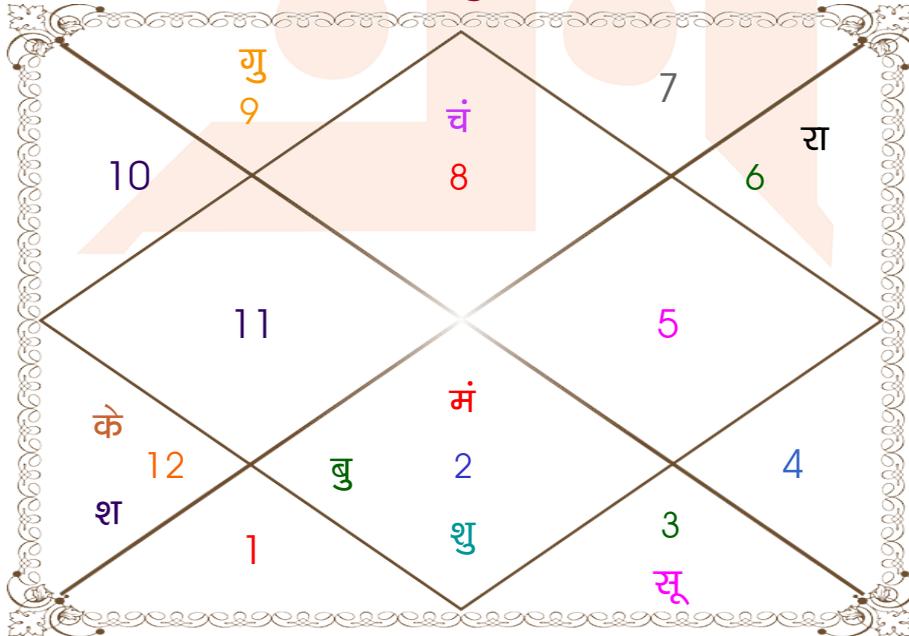
मास _____ : आश्विन
तिथि _____ : 1-6-11
दिन _____ : शुक्रवार
नक्षत्र _____ : रेवती
योग _____ : व्यतिपात
करण _____ : गर
प्रहर _____ : 1
वर्ग _____ : गरुड़
लग्न _____ : वृश्चिक
सूर्य _____ : मकर
चन्द्र _____ : वृष
मंगल _____ : कुम्भ
बुध _____ : वृश्चिक
गुरु _____ : मीन
शुक्र _____ : मेष
शनि _____ : कर्क
राहु _____ : वृष

जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली



चन्द्र कुण्डली



लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

के श		शु मं बु	सू
गु	चं	ल	रा

लग्न कुंडली

शु सू	बु मं		के श
रा	ल		गु चं

विंशोत्तरी
शनि 16वर्ष 5मा 5दि
शनि

28/06/1996

04/12/2113

शनि	02/12/2012
बुध	03/12/2029
केतु	02/12/2036
शुक्र	02/12/2056
सूर्य	03/12/2062
चन्द्र	02/12/2072
मंगल	03/12/2079
राहु	03/12/2097
गुरु	04/12/2113

योगिनी

भ्रामरी 3वर्ष 5मा 15दि
मंगला

13/12/2025

13/12/2026

मंगला	23/12/2025
पिंगला	13/01/2026
धान्या	12/02/2026
भ्रामरी	25/03/2026
भद्रिका	14/05/2026
उल्का	14/07/2026
सिद्धा	23/09/2026
संकटा	13/12/2026

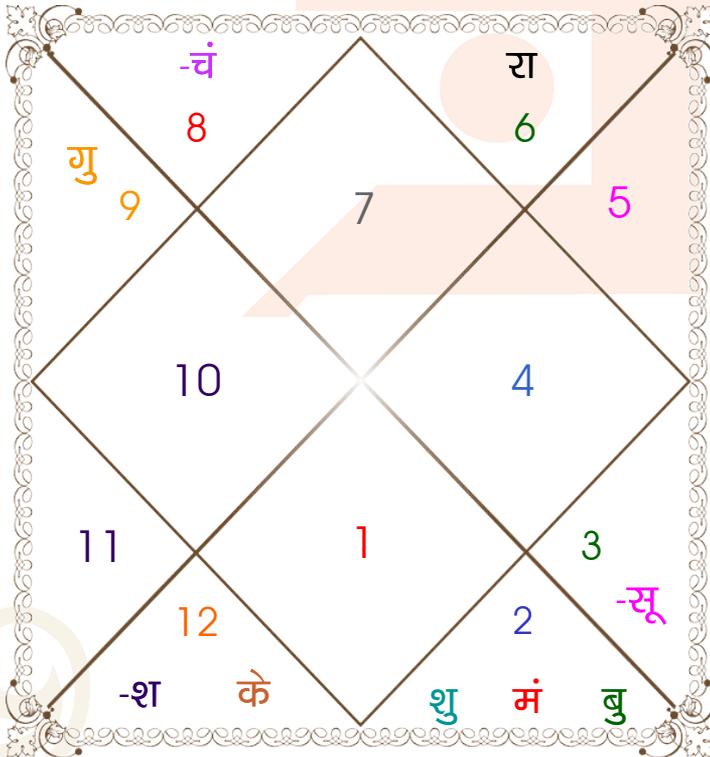
ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			तुला	26:05:17	305:35:29	विशाखा	2	16	शुक्र	गुरु	केतु	---
सूर्य			मिथु	13:10:44	00:57:11	आर्द्रा	2	6	बुध	राहु	बुध	सम राशि
चंद्र			वृश्चि	05:08:11	14:18:33	अनुराधा	1	17	मंगल	शनि	शनि	नीच राशि
मंगल			वृष	17:23:26	00:42:02	रोहिणी	3	4	शुक्र	चंद्र	शनि	सम राशि
बुध			वृष	28:29:57	01:53:53	मृगशिरा	2	5	शुक्र	मंगल	शनि	मित्र राशि
गुरु	व		धनु	19:43:41	00:07:35	पूर्वाषाढा	2	20	गुरु	शुक्र	राहु	स्वराशि
शुक्र	व		वृष	18:15:36	00:09:10	रोहिणी	3	4	शुक्र	चंद्र	बुध	स्वराशि
शनि			मीन	13:14:19	00:02:03	उ०भाद्रपद	3	26	गुरु	शनि	राहु	सम राशि
राहु	व		कन्या	19:32:20	00:06:30	हस्त	3	13	बुध	चंद्र	बुध	मूलत्रिकोण
केतु	व		मीन	19:32:20	00:06:30	रेवती	1	27	गुरु	बुध	शुक्र	मूलत्रिकोण
हर्ष	व		मक	09:49:10	00:02:03	उत्तराषाढा	4	21	शनि	सूर्य	शुक्र	---
नेप	व		मक	03:05:28	00:01:30	उत्तराषाढा	2	21	शनि	सूर्य	शनि	---
प्लूटो	व		वृश्चि	07:00:08	00:01:14	अनुराधा	2	17	मंगल	शनि	बुध	---
दशम भाव			सिंह	01:46:06	--	मघा	--	10	सूर्य	केतु	शुक्र	--

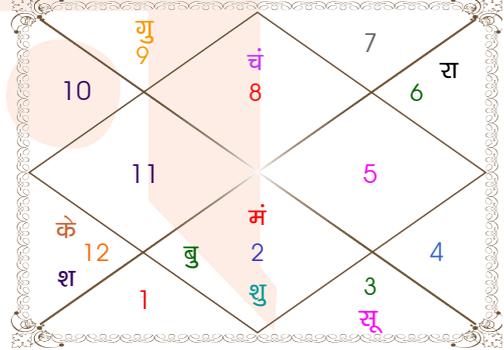
व - वकी स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:48:33

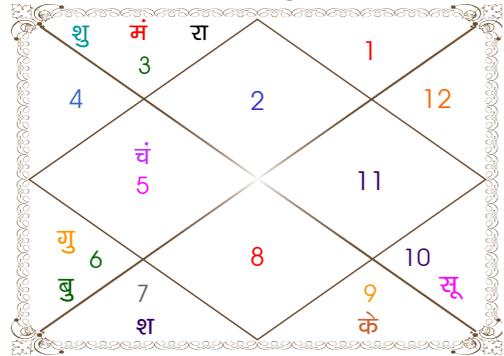
लग्न-चलित



चन्द्र कुंडली



नवमांश कुंडली



चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	तुला 12:02:05	तुला 26:05:17
2	वृश्चिक 12:02:05	वृश्चिक 27:58:53
3	धनु 13:55:41	धनु 29:52:29
4	मकर 15:49:18	कुम्भ 01:46:06
5	कुम्भ 15:49:18	कुम्भ 29:52:29
6	मीन 13:55:41	मीन 27:58:53
7	मेष 12:02:05	मेष 26:05:17
8	वृष 12:02:05	वृष 27:58:53
9	मिथुन 13:55:41	मिथुन 29:52:29
10	कर्क 15:49:18	सिंह 01:46:06
11	सिंह 15:49:18	सिंह 29:52:29
12	कन्या 13:55:41	कन्या 27:58:53

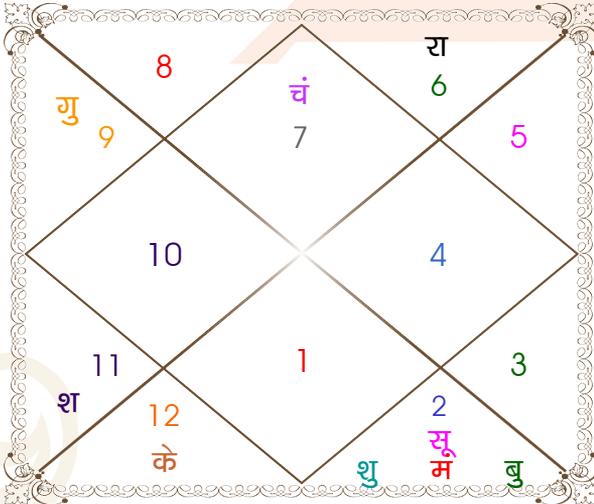
निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	तुला	26:05:17
2	वृश्चिक	25:41:43
3	धनु	27:57:19
4	कुम्भ	01:46:06
5	मीन	04:00:56
6	मेष	02:06:21
7	मेष	26:05:17
8	वृष	25:41:43
9	मिथुन	27:57:19
10	सिंह	01:46:06
11	कन्या	04:00:56
12	तुला	02:06:21

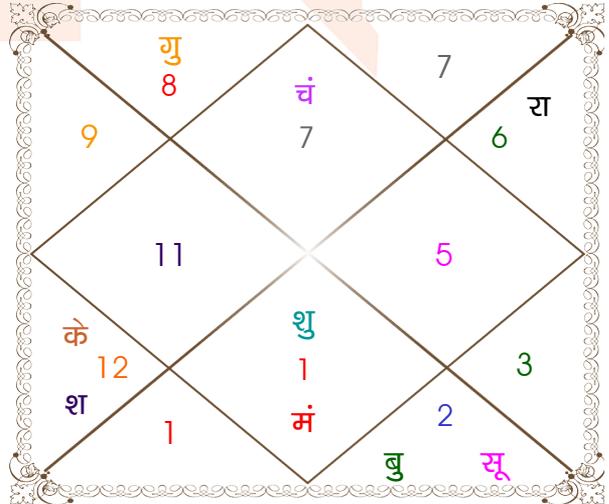
तारा चक्र

जन्म	सम्पत्	विपत्	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद
उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु
पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा

चलित कुंडली



भाव कुंडली



विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : शनि 16 वर्ष 5 मास 5 दिन

शनि 19 वर्ष	बुध 17 वर्ष	केतु 7 वर्ष	शुक्र 20 वर्ष	सूर्य 6 वर्ष
28/06/1996	02/12/2012	03/12/2029	02/12/2036	02/12/2056
02/12/2012	03/12/2029	02/12/2036	02/12/2056	03/12/2062
शनि 05/12/1996	बुध 01/05/2015	केतु 01/05/2030	शुक्र 03/04/2040	सूर्य 22/03/2057
बुध 16/08/1999	केतु 27/04/2016	शुक्र 01/07/2031	सूर्य 03/04/2041	चंद्र 21/09/2057
केतु 23/09/2000	शुक्र 26/02/2019	सूर्य 06/11/2031	चंद्र 03/12/2042	मंगल 26/01/2058
शुक्र 24/11/2003	सूर्य 03/01/2020	चंद्र 06/06/2032	मंगल 02/02/2044	राहु 21/12/2058
सूर्य 05/11/2004	चंद्र 03/06/2021	मंगल 02/11/2032	राहु 02/02/2047	गुरु 09/10/2059
चंद्र 06/06/2006	मंगल 31/05/2022	राहु 21/11/2033	गुरु 03/10/2049	शनि 20/09/2060
मंगल 16/07/2007	राहु 18/12/2024	गुरु 27/10/2034	शनि 02/12/2052	बुध 28/07/2061
राहु 22/05/2010	गुरु 26/03/2027	शनि 06/12/2035	बुध 03/10/2055	केतु 03/12/2061
गुरु 02/12/2012	शनि 03/12/2029	बुध 02/12/2036	केतु 02/12/2056	शुक्र 03/12/2062

चंद्र 10 वर्ष	मंगल 7 वर्ष	राहु 18 वर्ष	गुरु 16 वर्ष	शनि 19 वर्ष
03/12/2062	02/12/2072	03/12/2079	03/12/2097	04/12/2113
02/12/2072	03/12/2079	03/12/2097	04/12/2113	00/00/0000
चंद्र 03/10/2063	मंगल 01/05/2073	राहु 15/08/2082	गुरु 21/01/2100	शनि 29/06/2116
मंगल 03/05/2064	राहु 19/05/2074	गुरु 08/01/2085	शनि 04/08/2102	00/00/0000
राहु 02/11/2065	गुरु 25/04/2075	शनि 15/11/2087	बुध 09/11/2104	00/00/0000
गुरु 04/03/2067	शनि 03/06/2076	बुध 03/06/2090	केतु 16/10/2105	00/00/0000
शनि 03/10/2068	बुध 31/05/2077	केतु 22/06/2091	शुक्र 16/06/2108	00/00/0000
बुध 04/03/2070	केतु 27/10/2077	शुक्र 22/06/2094	सूर्य 04/04/2109	00/00/0000
केतु 03/10/2070	शुक्र 27/12/2078	सूर्य 16/05/2095	चंद्र 04/08/2110	00/00/0000
शुक्र 03/06/2072	सूर्य 04/05/2079	चंद्र 14/11/2096	मंगल 11/07/2111	00/00/0000
सूर्य 02/12/2072	चंद्र 03/12/2079	मंगल 03/12/2097	राहु 04/12/2113	00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल शनि 16 वर्ष 4 मा 23 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

बुध - गुरु 18/12/2024 26/03/2027	बुध - शनि 26/03/2027 03/12/2029	केतु - केतु 03/12/2029 01/05/2030	केतु - शुक्र 01/05/2030 01/07/2031	केतु - सूर्य 01/07/2031 06/11/2031
गुरु 07/04/2025 शनि 16/08/2025 बुध 11/12/2025 केतु 29/01/2026 शुक्र 16/06/2026 सूर्य 27/07/2026 चंद्र 04/10/2026 मंगल 21/11/2026 राहु 26/03/2027	शनि 28/08/2027 बुध 15/01/2028 केतु 12/03/2028 शुक्र 23/08/2028 सूर्य 11/10/2028 चंद्र 01/01/2029 मंगल 27/02/2029 राहु 25/07/2029 गुरु 03/12/2029	केतु 11/12/2029 शुक्र 05/01/2030 सूर्य 13/01/2030 चंद्र 25/01/2030 मंगल 03/02/2030 राहु 25/02/2030 गुरु 17/03/2030 शनि 10/04/2030 बुध 01/05/2030	शुक्र 11/07/2030 सूर्य 01/08/2030 चंद्र 06/09/2030 मंगल 01/10/2030 राहु 03/12/2030 गुरु 29/01/2031 शनि 07/04/2031 बुध 06/06/2031 केतु 01/07/2031	सूर्य 07/07/2031 चंद्र 18/07/2031 मंगल 25/07/2031 राहु 14/08/2031 गुरु 31/08/2031 शनि 20/09/2031 बुध 08/10/2031 केतु 16/10/2031 शुक्र 06/11/2031
केतु - चंद्र 06/11/2031 06/06/2032	केतु - मंगल 06/06/2032 02/11/2032	केतु - राहु 02/11/2032 21/11/2033	केतु - गुरु 21/11/2033 27/10/2034	केतु - शनि 27/10/2034 06/12/2035
चंद्र 24/11/2031 मंगल 06/12/2031 राहु 07/01/2032 गुरु 04/02/2032 शनि 09/03/2032 बुध 08/04/2032 केतु 21/04/2032 शुक्र 26/05/2032 सूर्य 06/06/2032	मंगल 15/06/2032 राहु 07/07/2032 गुरु 27/07/2032 शनि 19/08/2032 बुध 10/09/2032 केतु 18/09/2032 शुक्र 13/10/2032 सूर्य 21/10/2032 चंद्र 02/11/2032	राहु 30/12/2032 गुरु 19/02/2033 शनि 20/04/2033 बुध 14/06/2033 केतु 06/07/2033 शुक्र 08/09/2033 सूर्य 27/09/2033 चंद्र 29/10/2033 मंगल 21/11/2033	गुरु 05/01/2034 शनि 28/02/2034 बुध 17/04/2034 केतु 07/05/2034 शुक्र 03/07/2034 सूर्य 20/07/2034 चंद्र 17/08/2034 मंगल 06/09/2034 राहु 27/10/2034	शनि 31/12/2034 बुध 26/02/2035 केतु 21/03/2035 शुक्र 28/05/2035 सूर्य 17/06/2035 चंद्र 21/07/2035 मंगल 14/08/2035 राहु 13/10/2035 गुरु 06/12/2035
केतु - बुध 06/12/2035 02/12/2036	शुक्र - शुक्र 02/12/2036 03/04/2040	शुक्र - सूर्य 03/04/2040 03/04/2041	शुक्र - चंद्र 03/04/2041 03/12/2042	शुक्र - मंगल 03/12/2042 02/02/2044
बुध 27/01/2036 केतु 17/02/2036 शुक्र 17/04/2036 सूर्य 05/05/2036 चंद्र 04/06/2036 मंगल 25/06/2036 राहु 19/08/2036 गुरु 06/10/2036 शनि 02/12/2036	शुक्र 23/06/2037 सूर्य 23/08/2037 चंद्र 03/12/2037 मंगल 12/02/2038 राहु 13/08/2038 गुरु 23/01/2039 शनि 03/08/2039 बुध 23/01/2040 केतु 03/04/2040	सूर्य 21/04/2040 चंद्र 22/05/2040 मंगल 12/06/2040 राहु 06/08/2040 गुरु 23/09/2040 शनि 20/11/2040 बुध 11/01/2041 केतु 01/02/2041 शुक्र 03/04/2041	चंद्र 24/05/2041 मंगल 28/06/2041 राहु 28/09/2041 गुरु 18/12/2041 शनि 24/03/2042 बुध 19/06/2042 केतु 24/07/2042 शुक्र 03/11/2042 सूर्य 03/12/2042	मंगल 28/12/2042 राहु 02/03/2043 गुरु 28/04/2043 शनि 04/07/2043 बुध 02/09/2043 केतु 27/09/2043 शुक्र 07/12/2043 सूर्य 29/12/2043 चंद्र 02/02/2044

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांको से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

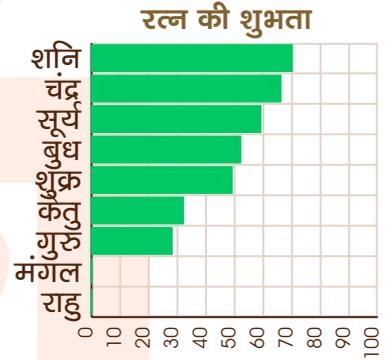
मूलांक	1
भाग्यांक	5
मित्र अंक	1, 4, 8, 9, 5
शत्रु अंक	3, 6
शुभ वर्ष	19,28,37,46,55
शुभ दिन	शनि, बुध, शुक्र
शुभ ग्रह	शनि, बुध, शुक्र
मित्र राशि	कर्क, सिंह
मित्र लग्न	मकर, मिथुन, सिंह
अनुकूल देवता	शिव
शुभ रत्न	हीरा
शुभ उपरत्न	जरकिन, ओपल
भाग्य रत्न	पन्ना
शुभ धातु	रजत
शुभ रंग	रजत
शुभ दिशा	दक्षिणपूर्व
शुभ समय	सूर्योदय
दान पदार्थ	मिसरी, दधि, श्वेतचन्दन
दान अन्न	चावल
दान द्रव्य	दूध

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
नीलम	शनि	70%	शत्रु व रोग मुक्ति, सुख, सन्तति सुख
मोती	चंद्र	66%	धन, व्यावसायिक उन्नति
माणिक्य	सूर्य	59%	भाग्योदय, धनार्जन
पन्ना	बुध	52%	दुर्घटना से बचाव, भाग्योदय, कम खर्च
हीरा	शुक्र	49%	दुर्घटना, रोग
लहसुनिया	केतु	32%	शत्रु व रोग, पराक्रम हानि
पुखराज	गुरु	28%	पराक्रम हानि, शत्रु व रोग
मूंगा	मंगल	0%	दुर्घटना, दाम्पत्य कष्ट, धन हानि
गोमेद	राहु	0%	व्यय, दुर्घटना



दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
शनि	02/12/2012	44%	53%	0%	58%	28%	56%	83%	10%	7%
बुध	03/12/2029	66%	53%	0%	64%	28%	56%	70%	0%	32%
केतु	02/12/2036	44%	53%	0%	52%	28%	56%	58%	0%	53%
शुक्र	02/12/2056	44%	53%	0%	58%	28%	62%	77%	10%	44%
सूर्य	03/12/2062	72%	72%	0%	52%	40%	24%	58%	0%	7%
चंद्र	02/12/2072	66%	78%	0%	58%	28%	49%	70%	0%	7%
मंगल	03/12/2079	66%	72%	3%	28%	40%	49%	70%	0%	44%
राहु	03/12/2097	44%	53%	0%	52%	28%	56%	77%	23%	7%
गुरु	04/12/2113	66%	72%	0%	28%	51%	24%	70%	0%	32%

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

प्रथम चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	23/07/2002-08/01/2003 07/04/2003-06/09/2004 13/01/2005-26/05/2005
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	15/11/2011-16/05/2012 04/08/2012-02/11/2014 -----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	02/11/2014-26/01/2017 21/06/2017-26/10/2017 -----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	26/01/2017-21/06/2017 26/10/2017-24/01/2020 -----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	29/04/2022-12/07/2022 17/01/2023-29/03/2025 -----

द्वितीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	31/05/2032-13/07/2034 -----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	28/01/2041-06/02/2041 26/09/2041-11/12/2043 23/06/2044-30/08/2044
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	11/12/2043-23/06/2044 30/08/2044-08/12/2046 -----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	08/12/2046-06/03/2049 10/07/2049-04/12/2049 -----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	25/02/2052-14/05/2054 02/09/2054-05/02/2055 -----

तृतीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	11/07/2061-13/02/2062 07/03/2062-24/08/2063 06/02/2064-09/05/2064
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	04/11/2070-05/02/2073 31/03/2073-23/10/2073 -----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	05/02/2073-31/03/2073 23/10/2073-16/01/2076 11/07/2076-11/10/2076
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	16/01/2076-11/07/2076 11/10/2076-15/01/2079 -----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	12/04/2081-03/08/2081 07/01/2082-20/03/2084 -----

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार

अष्टम स्थानस्थ ढैया
साढ़ेसाती प्रथम ढैया
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया
साढ़ेसाती तृतीय ढैया
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया

फल

शुभ
शुभ
अशुभ
शुभ
शुभ

क्षेत्र

भाग्योदय
स्वास्थ्य
धन
पराक्रम
सन्तति सुख

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ॐ हों जूं सः ॐ भूर्भुव स्वः ॐ ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डेंट बनाकर धारण करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः ।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।।**

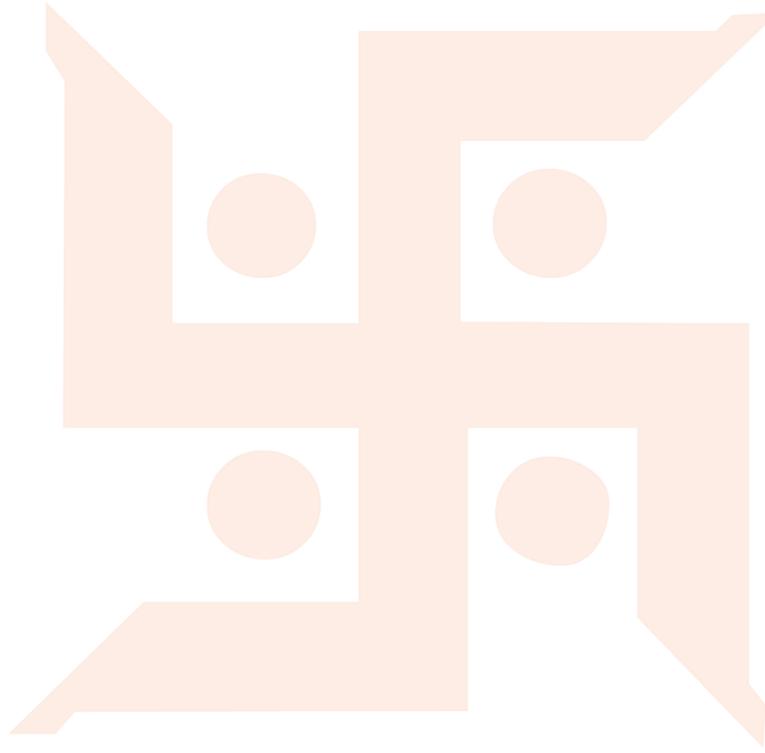
मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

आपकी कुंडली में जन्म के समय मंगल की स्थिति अष्टम भाव में है अतः आप एक मांगलिक पुरुष हैं। चूंकि आपकी कुंडली में यह दोष भंग नहीं हो रहा है अतः इसके प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा पित जनित एवं रक्त विकार से आप यदा कदा कष्ट की अनुभूति करेंगे साथ ही पत्नी का स्वास्थ्य भी मध्यम रहेगा एवं उनके स्वभाव में तेजस्विता का भाव रहेगा जिससे यदा कदा परस्पर संबंधों में मतभेद उत्पन्न होंगे लेकिन यह अल्प समय के लिए रहेगा तथा इसका कोई विशेष दुष्प्रभाव भी नहीं होगा। साथ ही समय समय पर आपके सांसारिक महत्व के कार्यों को सम्पन्न करने में अधिक परिश्रम करना पड़ेगा। इसके प्रभाव से आपके विवाह में न्यूनाधिक मात्रा में विलम्ब होगा तथा विवाह पूर्व किसी वार्ता में बाधा भी आ सकती है परन्तु अन्त में आपको सफलता प्राप्त होगी तथा सामान्यतया सुख पूर्वक आपका दाम्पत्य जीवन व्यतीत होगा।

आपकी कुंडली में मंगल अष्टम भाव में है अतः आपका स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। यदा कदा गर्मी आदि से आपको किंचित परेशानी की अनुभूति हो सकती है। सांसारिक महत्व के कार्यों को पूर्ण करने में भी आपको अधिक परिश्रम करना पड़ेगा एकादश भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से आय स्रोतों में वृद्धि होगी। आवश्यक मात्रा में लाभार्जन भी होता रहेगा परन्तु इस में आपको अधिक परिश्रम एवं पराक्रम का प्रदर्शन करना पड़ेगा। द्वितीय भाव पर मंगल की दृष्टि से पारिवारिक शान्ति मध्यम रहेगी तथा यदा कदा पारिवारिक जनों के मध्य मतभेद भी उत्पन्न होंगे। साथ ही वाणी में ओजस्विता का भाव भी रहेगा परन्तु धनार्जन अच्छा रहेगा तृतीय भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से भाई बहनों का सुख एवं सहयोग मध्यम रहेगा। पराक्रम में वृद्धि होगी जिससे आप अपने उन्नति मार्ग को प्रशस्त करने में समर्थ रहेंगे।

अपने दाम्पत्य जीवन को सुखी एवं आनन्दमय बनाने के लिए आपको ऐसी

मांगलिक कन्या से विवाह करना चाहिए जिससे आपका मांगलिक दोष भंग हो सके। इसके लिए कन्या की कुंडली में मांगलिक स्थानों अर्थात् प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम एवं द्वादश भाव में शनि या राहु की स्थिति होनी चाहिए। इस प्रकार मांगलिक दोष भंग हो जाने पर आपके सुख सौभाग्य में वृद्धि होगी तथा ऐश्वर्य आदि से आप सुसम्पन्न होकर आनन्दपूर्वक अपना दाम्पत्य जीवन व्यतीत करेंगे। साथ ही परस्पर संबंधों में भी मधुरता तथा सहयोग का भाव विद्यमान रहेगा।



कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग ।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलाब्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलाब्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरान्त पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।

नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ॥

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृ का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- पंचम भाव का स्वामी शनि है तथा उस पर राहु का प्रभाव है।
- नवम भाव के स्वामी पर शनि और राहु का प्रभाव है।
- लग्नेश अष्टम भाव में स्थित है और उस पर शनि और राहु का प्रभाव है।
- शुक्र, बुध और राहु 2, 5, 9 या 12 वें भाव में स्थित है।

आपकी कुण्डली में बुध, शुक्र, शनि और राहु के कारण पितृदोष है।

आपकी कुण्डली में बुध पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी महिला सदस्य द्वारा बच्चों पर किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ आप बहन, बुआ तथा मौसी की सेवा करके आर्शीवाद लें तथा तोते को हरी मिर्च खिलाकर पिंजड़े से मुक्त कर दें।

आपकी कुण्डली में शुक्र पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी महिला पूर्वज द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ गरीब या जरूरतमंद स्त्रियों, कन्याओं को तथा पत्नी को दान दें। 11 वर्ष से छोटी 9 कन्याओं को मंदिर में

खीर खिलायें।

आपकी कुंडली में शनि पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पुरुष सदस्य द्वारा दलित पर किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ भगवान रुद्र की पूजा करें। पीपल को जल चढ़ायें व पूजा करें। शम्मी की समिधा से हवन करें। बकरी व शनि प्रीतकारी वस्तुओं का दान करें। गरीब या जरूरतमंदों की सहायता के रूप में दान दें तथा कौए को खाने का पहला ग्रास खिलायें।

आपकी कुंडली में राहु पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पूर्वज द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ शनिवार गाय को सवा पांच किलो जौ सवा किलो गुड़ में मिलाकर खिलाना चाहिए। सूखे गोले में पंजीरी भरकर काले कपड़े में लपेटकर किसी सुनसान जगह पर मिट्टी में दबाएं। कबूतरों को दाना, चींटी को आटा तथा मछलियों को आटे की गोली बनाकर खिलायें।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह स्रयंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

ग्रह फल

सूर्य

नवमभाव में सूर्य होतो जातक साहसी, ज्योतिषी, नेता सदाचारी, तपस्वीयोगी, वाहनसुख, भृत्यसुख एवं पिता के लिए अशुभ होता है।

मिथुन राशि में रवि हो तो जातक धनवान्, ज्योतिषी, इतिहास प्रेमी उदार, विवेकी, विद्वान्, बुद्धिमान, मधुरभाषी, नम्र एवं प्रेमी होता है।

आपके जन्म काल में सूर्य नवम भाव में स्थित है अतः आप पिता के स्नेह पात्र होंगे। उनका स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं समय समय पर शारीरिक रूप से वे व्याकुलता की अनुभूति करेंगे। जीवन में धन सम्पत्ति से सर्वदा युक्त रहेंगे एवं समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको अपनी ओर से पूर्ण सहयोग तथा सहायता प्रदान करेंगे। इसके साथ ही आपके भाग्योदय संबंधी कार्यों में भी उनकी आपके लिए पूर्ण प्रेरणा तथा सहयोग का भाव रहेगा।

आप भी उनका पूर्ण हार्दिक सम्मान करेंगे एवं उनकी आज्ञा पालन तथा सेवा करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। आपके परस्पर मधुर संबंध रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद उत्पन्न होने के कारण इनमें अल्प मात्रा में तनाव या कटुता का समावेश का आभास होगा जो कुछ समयोपरान्त स्वतः ही समाप्त हो जाएगा। इसके अतिरिक्त आप जीवन में उनकी हार्दिक सहायता करेंगे एवं सुख दुःख में उनको पूर्ण वांछित आर्थिक या अन्य प्रकार से अपना सहयोग प्रदान करने के लिए सदैव तत्पर रहेंगे।

चन्द्र

द्वितीयभाव में चन्द्रमा हो तो जातक परदेशवासी, भोगी, सुन्दर मधुरभाषी, भाग्यवान्, सहनशील एवं शान्तिप्रिय होता है।

वृश्चिक राशि में चन्द्रमा हो तो जातक अपने माता-पिता, भाइयों आदि से अलग रहने वाला, नास्तिक, लोभी, बन्धुहीन, परस्त्रीरत, झगड़ालू, स्पष्ट वक्ता, बुरे विचार रखने वाले, दुःखी, हठी, अनैतिक विचारों वाला एवं धनी होता है।

आपके जन्म काल में चन्द्रमा द्वितीय भाव में स्थित है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं कोई विशेष शारीरिक रुग्णता नहीं रहेगी। वे आपको हमेशा धनार्जन एवं विद्याध्ययन संबंधी कार्यों में पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगी। साथ ही आपकी पारिवारिक उन्नति एवं पालन करने में भी उनकी मुख्य भूमिका रहेगी यदा कदा वे आपको नैतिक शिक्षा भी देंगी तथा आपके प्रति उनके हृदय में पूर्ण वात्सल्य का भाव रहेगा। इसके साथ ही जीवन में कई महत्वपूर्ण कार्यों की सिद्धि आप उनके सहयोग से ही करेंगे।

आप की भी माता के प्रति हार्दिक श्रद्धा रहेगी एवं उनकी आज्ञा पालन करने में आप गौरव की अनुभूति करेंगे। साथ ही जीवन में सर्वप्रकार से उनकी सेवा करना आप अपना कर्तव्य समझेंगे तथा समयानुसार उनको आर्थिक सहयोग भी प्रदान करते रहेंगे। अतः आपकी

परस्पर संबंध मधुर रहेंगे एवं जीवन में एक दूसरों की सहायता एवं सहयोग का आदान प्रदान करके सुखानुभूति करेंगे।

मंगल

आठवेंभाव में मंगल हो तो जातक व्याधिस्त, व्यसनी, मद्यपायी, कठोरभाषी, उन्मत्त, नेत्ररोगी, शस्त्रचोर, संकोची, अग्निभीरु, धनचिन्ता युक्त एवं रक्तविकारयुक्त होता है।

वृष राशि में मंगल हो तो जातक अत्यन्त कामुक, अनैतिक आचरण, पुत्रद्वेषी, प्रवासी, सुखहीन, लड़ाकू प्रकृति, वंचक, सिद्धान्त रहित, स्वार्थी एवं क्रूर होता है।

आपके जन्म समय में मंगल अष्टम भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक अस्वस्थता से वे व्याकुलता की अनुभूति करेंगे। आपके प्रति उनके मन में स्नेह तथा सम्मान का भाव भी विद्यमान रहेगा। धन धान्य से वे प्रायः युक्त रहेंगे एवं यथाशक्ति जीवन में आपको अपना सहयोग तथा सहायता प्रदान करते रहेंगे। साथ ही यदा कदा आप उनसे विशेष रूप से आर्थिक सहयोग भी प्राप्त करेंगे। इसके अतिरिक्त सुख दुःख में भी वे आपका साथ देंगे तथा अपनी ओर से कोई भी कष्ट नहीं होने देंगे।

आप भी उनको हार्दिक सम्मान प्रदान करेंगे तथा उनकी सहायता करने के लिए हमेशा तत्पर रहेंगे। आप के आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेदों के कारण उनमें कटुता या तनाव भी उत्पन्न होगा परन्तु यह तनाव अस्थाई रहेगा एवं शीघ्र ही समाप्त हो जाएगा। जीवन में आप सभी विषम परिस्थितियों में सर्वदा उनकी अपनी ओर से वांछित सहायता प्रदान करते रहेंगे।

बुध

अष्टमभाव में बुध हो तो जातक दीर्घायु, अभिमानी, राजमान्य, कृषक, लब्धप्रतिष्ठ, मानसिक दुखी, कवि, वक्ता, न्यायाधीश, मनस्वी, धनवान् एवं धर्मात्मा होता है।

वृष राशि में बुध हो तो जातक कुशाबुद्धिवाला, उच्चपद पर आसीन, सुगठित शरीर, दिखावा पसन्द करने वाला, शास्त्रज्ञ, व्यायामप्रिय, धनवान्, गम्भीर, मधुरभाषी, विलासी एवं रतिशास्त्रज्ञ होता है।

गुरु

तृतीयभाव में गुरु हो तो जातक शास्त्रज्ञ, जितेन्द्रिय, लेखक, कामी, प्रवासी, स्त्रीप्रिय, व्यवसायी, मन्दाग्नि, वाहनयुक्त, पर्यटनशील, विदेशप्रिय, ऐश्वर्यवान् बहुत भाई बहन, आस्तिक एवं योगी होता है।

धनु राशि में गुरु हो तो जातक धनी, प्रभावशाली, विद्वान्, विश्वस्त, सज्जन, दानशील संगठनकर्ता, अच्छा वक्ता, धर्माचार्य, दम्भी, रतिप्रेमी एवं धूर्त होता है।

शुक्र

अष्टम भाव में शुक्र हो तो जातक ज्योतिषी, क्रोधी, मनस्वी, दुखी, गुप्तरोगी, पर्यटनशील, परस्त्रीरत, विदेशवासी, निर्दयी, गुप्तविद्याओं के प्रतिरुचि एवं रोगी होता है।

वृष राशि में शुक्र हो तो जातक सुन्दर, ऐश्वर्यवान्, दानी, सदाचारी, सात्त्विक, परोपकारी, अनेक शास्त्रज्ञ, दृढ़, स्वतन्त्रकामुक, शौकीन तबीयत, संगीत-नृत्य तथा अन्य कलाओं में रुचि एवं आलसी होता है।

शनि

षष्ठभाव में शनि हो तो जातक बलवान्, आचारहीन, व्रणी, जातिविरोधी, श्वासरोगी, कण्ठरोगी, योगी, शत्रुहन्ता भोगी एवं कवि होता है।

मीन राशि में शनि हो तो जातक अविचारी, शिल्पकार हतोत्साही, धनी, प्रसिद्ध, सुखी एवं दूसरों की सहायता करने वाला होता है।

राहु

बारहवें भाव में राहु हो तो जातक विवेकहीन, कामी, चिन्ताशील, अतिव्ययी, सेवक, परिश्रमी, मूर्ख एवं मतिमन्द होता है।

कन्या राशि में राहु हो तो जातक लोकप्रिय, मधुरभाषी, कविलेखक, गवैया एवं धनी होता है।

केतु

षष्ठभाव में केतु हो तो जातक वात विकारी, झगड़ालू, अरिष्टनिवारक, सुखी, मितव्ययी, भूत प्रेतजनित रोगों से रोगी, दुर्घटना, दीर्घायु एवं धनी होता है।

मीन राशि में केतु हो तो जातक परिश्रमी, धार्मिक प्रवृत्तिवाला, कर्णरोगी, प्रवासी, चंचल और कार्यपरायण होता है।

दशा विश्लेषण

महादशा :- बुध
(02/12/2012 - 03/12/2029)

बुध की महादशा 02/12/2012 को आरम्भ होगी और 17 वर्ष की होकर 03/12/2029 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में बुध अष्टम भाव में स्थित है। बुध की दृष्टि द्वितीय भाव पर है। इसके पूर्व आपकी 19 वर्ष की शनि दशा चल रही थी। इस दशा में शनि आपकी छोटी यात्रा तथा जमीन-जायदाद में वृद्धि हुई होगी, संबंधियों से सहायता तथा जमीन तथा सम्पत्ति की प्राप्ति हुई होगी। बुध की वर्तमान दशा में आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, शिक्षा उत्तम होगी और जमीन-जायदाद में वृद्धि होगी।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आप स्फूर्तिवान और शक्तिशाली रहेंगे। आपको ज्वर, संक्रामक बीमारी, चर्मरोग, फ्लू, बदहजमी, पेट दर्द आदि कुछ मौसमी बीमारियाँ हो सकती हैं। इन मामूली बीमारियों को छोड़ आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा।

अर्थ और व्यवसाय :

आपको सम्पत्ति की प्राप्ति हो सकती है। आपको अवकाश ग्रहण से लाभ, बोनस और ग्रेय्यूइटी मिल सकती है। सद्दा लाभदायक होगा। अचानक लाभ भी हो सकता है। कुल मिलाकर अर्थ की दृष्टि से यह दशा आपके लिए उत्तम होगी क्योंकि इसमें आपका धन-संग्रह होगा। जीवन-वृत्ति और व्यवसाय के लिए लेखा, पत्रकारिता, शिक्षण तथा सभी बौद्धिक कार्यों का चयन कर सकते हैं। सूती कपड़ा, रत्न, पुस्तक, लेखा-सामग्री, कम्प्यूटर तथा हस्तनिर्मित वस्तुओं का व्यापार लाभदायक हो सकता है। नौकरीपेशा लोग अच्छा करेंगे, उन्हें सफलता उच्च पद और अधिकार मिलेगा। व्यवसाय-व्यापार से जुड़े लोगों को सम्पत्ति की प्राप्ति, आय में वृद्धि तथा लाभ होगा। आपको सहकर्मियों का सहयोग मिलेगा और आप अपना लक्ष्य प्राप्त करेंगे। आपको सभी कार्यों में सफलता मिलेगी। आर्थिक तथा व्यावसायिक उपलब्धि के लिए यह दशा बहुत उत्तम है।

वाहन, यात्रा, जमीन-जायदाद :

शनि की अन्तर्दशा में आपको जीवन का हर सुख प्राप्त होगा। आपको जमीन तथा अचल सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। आपका पैतृक या विरासती सम्पत्ति मिल सकती है। आपको वाहन की प्राप्ति भी होगी। शनि की अन्तर्दशा में आपकी छोटी यात्रा और शुक्र की अन्तर्दशा में दूर की यात्रा होगी। तीर्थान पर जा सकते हैं।

शिक्षा :

आपकी शिक्षा उत्तम होगी। आपकी अनुसन्धान परियोजना में रुचि हो सकती है। आप सभी परीक्षाओं तथा प्रतियोगिताओं में बहुत अच्छा करेंगे। आप विज्ञान, गणित तथा वाणिज्य में अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करेंगे। लेखा, वाणिज्य, साहित्य, कम्प्यूटर विज्ञान, रचनात्मक पत्रकारिता, समाचार माध्यम, जनसंचार आदि विषयों में आपकी रुचि होगी। आप

प्रतिभावान, कूटनीतिक और बहुमुखी हैं तथा विभिन्न विषयों में आपकी रुचि है। आपका दिमाग विवेकपूर्ण और विश्लेषणात्मक है और सभी बौद्धिक कार्यों में अच्छा करेंगे।

परिवार :

आपका परिवार के सभी सदस्यों के साथ सम्बन्ध अच्छा रहेगा। आपको बच्चों से सुख तथा आनन्द मिलेगा। आपके जीवन साथी को लाभ, पारिवारिक सुख तथा अचानक धन की प्राप्ति होगी। आपका आपके जीवन साथी के साथ सम्बन्ध उत्तम रहेगा। आपकी माता को सट्टे में लाभ और सुख मिलेगा जबकि आपके पिता का शुभ कार्यों में व्यय होगा, उनकी यात्रा होगी और आध्यात्मिक कार्यों के प्रति झुकाव होगा। आपके छोटे भाई-बहनों को विरोधियों पर विजय मिलेगी और कार्य-स्थान में स्थिति अनुकूल होगी जबकि बड़े भाई-बहनों को जीविकोपार्जन में सफलता, यश और ख्याति मिलेगी।

अन्तर्दशा :

बुध की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपका धन संग्रह होगा तथा जमीन-जायदाद और आध्यात्मिक कार्यों में रुचि में वृद्धि होगी। केतु के फलस्वरूप कुछ समस्याएं उत्पन्न हो सकती हैं। शुक की अन्तर्दशा में यात्रा तथा साझेदारों से लाभ मिलेगा। सूर्य की अन्तर्दशा में जीविकोपार्जन में प्रगति होगी जबकि चन्द्र की अन्तर्दशा में सम्पत्ति तथा समृद्धि की प्राप्ति होगी। मंगल की अन्तर्दशा के फलस्वरूप यश, ख्याति और शत्रुओं पर विजय मिलेगी तथा स्वास्थ्य उत्तम रहेगा जबकि राहु कुछ समस्याएं उत्पन्न कर सकता है। गुरु की अन्तर्दशा में सम्पत्ति तथा बच्चों से सुख की प्राप्ति होगी। शनि की अन्तर्दशा के फलस्वरूप छोटी यात्रा होगी और सुख तथा जमीन-जायदाद में वृद्धि होगी।

**अंतर्दशा :- बुध - गुरु
(18/12/2024 - 26/03/2027)**

आपके लिए बुध की महादशा 02/12/2012 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में आठवीं अंतर्दशा बृहस्पति की है, जिसकी अवधि 2 वर्ष 3 मास 6 दिन है। आपके लिए यह 18/12/2024 को प्रारंभ होकर 26/03/2027 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बृहस्पति बुद्धि, धन, समृद्धि और उच्चकोटि के ज्ञान का कारक है।

इस अवधि में आपकी लेखन और वाक्शक्ति उत्तम रहेगी। प्रत्येक कार्य में साहस का परिचय देंगे। छोटे-भाई-बहनों से प्रसन्नता मिलेगी, धनलाभ होगा। रिश्तेदारों से संबंध उत्तम रहेंगे। लाभकारी लघु यात्राएं हो सकती हैं। विवाह हो सकता है। घरेलू जीवन सुखी रहेगा। व्यापार में लाभ होगा; कार्यों में सफलता मिलेगी। आध्यात्मिक उन्नति होगी। शिक्षा पूर्ण हो सकती है; परीक्षा में सफलता मिलेगी।

आपके जीवनसाथी प्रसिद्ध और समृद्ध होंगे; यात्राएं होंगी। आपके पिता को साझेदारी से लाभ होगा, व्यापार में सफल होंगे, घरेलू जीवन सुखी रहेगा। आपके भाई-बहनों के लिए सौभाग्य, अरिष्ट से बचाव, उच्च पद का संकेत है।

आपकी माता के खर्चे बढ़ेंगे; शत्रुओं पर विजय होगी।

आपकी संतान सफल और धनी होगी; प्रभावशाली मित्र होंगे। अगर वे कार्यरत हैं तो धनी बनेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो कार्यक्षेत्र में प्रसिद्ध होंगे। परामर्शदाताओं का कार्यालय उत्तम होगा। व्यापारी भाग्यशाली होंगे, लाभ बढ़ेगा। आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए ब्रह्माजी की उपासना करें।

**अंतर्दशा :- बुध - शनि
(26/03/2027 - 03/12/2029)**

आपके लिए बुध की महादशा 02/12/2012 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में नवीं अंतर्दशा शनि की होगी जो आपके लिए 26/03/2027 को प्रारंभ होकर 03/12/2029 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शनि आयु और धैर्य का कारक है।

इस अवधि में आप शत्रुओं पर विजयी होंगे। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। प्रोन्नति होगी, उच्च पद मिलेगा। कार्यालय में वातावरण मधुर रहेगा; मातहत सहयोग करेंगे। धनागम होगा; समृद्ध बनेंगे। कार्यक्षेत्र में जिम्मेदारियां बढ़ेंगी, दक्षता उत्तम रहेगी। खुशियां बढ़ेंगी। धनागम होगा, उत्साह से पूर्ण रहेंगे। जीवनसाथी के माध्यम से लाभ हो सकता है; तंत्र-मंत्र में रुचि हो सकती है। जीवन में कुछ परिवर्तन हो सकते हैं।

आपके जीवनसाथी के जीवन में मामूली परिवर्तन हो सकता है। आपके पिता धनी बनेंगे; भूमि से अच्छी आय हो सकती है। माता प्रसन्न रहेंगी, उत्साह उत्तम होगा। आपके

**महादशा :- केतु
(03/12/2029 - 02/12/2036)**

केतु की महादशा को 03/12/2029 आरम्भ और 02/12/2036 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 7 वर्ष है। आपकी जन्मकुण्डली में केतु छठे भाव में स्थित है जहाँ से इसकी दृष्टि बारहवें भाव पर है। इसके पूर्व आपकी बुध की दशा चल रही थी जिसकी अवधि 17 वर्ष थी। बुध के कारण आपको यश और ख्याति की प्राप्ति और प्रगति हुई होगी तथा स्वास्थ्य उत्तम रहा होगा। केतु की वर्तमान दशा में शत्रुओं पर विजय, सौभाग्य, यश तथा अधिकार मिलेगा।

स्वास्थ्य :

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आप में किसी बीमारी से लड़ने की क्षमता होगी। आपको छूत की बीमारी, बुखार, अल्सर, चर्मरोग, घाव और मूत्राशय में पीड़ा हो सकती है। कुछ सावधानी बरतकर इनसे बचाव किया जा सकता है।

अर्थ और व्यवसाय :

आपकी आर्थिक स्थिति उत्तम होगी। आपको अपने विरोधियों से लाभ मिलेगा। ननिहाल पक्ष से लाभ मिल सकता है। सट्टे तथा अन्य निवेश से लाभ होगा। केस-मुकदमे में निर्णय आपके पक्ष में होंगे। जीविका-व्यवसाय के लिए भाषा, कम्प्यूटर, इलेक्ट्रॉनिक, शरीर-विज्ञान, प्रौद्योगिकी, ज्योतिष, परा-चिकित्सा सेवा अथवा समाज सेवा के क्षेत्र का अध्ययन कर सकते हैं। चिकित्सा उपकरण, द्रव इंजीनियरी, लोहा-इस्पात, दवा, रेडियो के पुर्जे, कम्प्यूटर, इलेक्ट्रॉनिक के पुर्जे, रत्न, खनिज आदि का व्यवसाय लाभदायक हो सकता है। नौकरीपेशा लोगों के कार्य-स्थान में माहौल अनुकूल रहेगा। आपको सहयोगियों-सहकर्मियों से सहयोग और वरिष्ठ कर्मचारियों से सदभाव मिलेगा। व्यवसाय-व्यापार से जुड़े लोगों को कार्य में सफलता, अच्छी आय और लाभ होगा। कार्य के सिलसिले में आपकी यात्रा हो सकती है।

वाहन, यात्रा, जायदाद :

गुरु की अन्तर्दशा में आपको आराम मिलेगा। आप गाड़ी बदल सकते हैं या नयी गाड़ी ले सकते हैं। आप जमीन-जायदाद की खरीद या बिक्री कर सकते हैं। आवास में परिवर्तन

हो सकता है। मंगल की अन्तर्दशा में छोटी यात्रा और सूर्य की अन्तर्दशा में लम्बी यात्रा की सम्भावना है।

शिक्षा :

शिक्षा उत्तम होगी और आप प्रतियोगिताओं और परीक्षाओं में अच्छा करेंगे। तकनीकी विषयों में आपकी रुचि होगी। कम्प्यूटर विज्ञान, इलेक्ट्रॉनिक इंजीनियरिंग, भाषा, भौतिक शास्त्र, वायु-सैनिक के कार्य, दवा, विज्ञान, तत्त्वमीमांसा, प्रसारण, गुप्त विद्या तथा अन्य विषय आदि में भी आपकी रुचि हो सकती है। आप अपने अध्ययन में अच्छा करेंगे और सभी परीक्षाओं प्रतियोगिताओं में सफल होंगे।

परिवार :

परिवार के साथ आपका सम्बन्ध मधुर रहेगा। आपके बच्चों को लाभ तथा समृद्धि मिलेगी। आपके जीवन साथी को कुछ स्वास्थ्य समस्या होगी, अनावश्यक खर्च होगा तथा व्यर्थ की यात्रा होगी। आपकी माता के जीवन में कुछ परिवर्तन होगा, छोटी यात्रा होगी और स्वास्थ्य उत्तम रहेगा जबकि पिता को यश, ख्याति और अधिकार प्राप्त होगा। आपके छोटे भाई-बहनों की जमीन-जायदाद में वृद्धि, उत्तम शिक्षा तथा कुछ मामूली स्वास्थ्य समस्या होगी जबकि बड़ों के जीवन में अप्रत्याशित परिवर्तन, अचानक लाभ तथा हानि होगी।

अन्तर्दशा :

केतु की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के दौरान विरोधियों पर विजय मिलेगी और स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। मंगल की अन्तर्दशा में सुख-सम्पत्ति की प्राप्ति तथा यात्रा होगी। चन्द्र की अन्तर्दशा में लोकप्रियता मिलेगी और विभिन्न स्रोतों से लाभ होगा। मंगल की अन्तर्दशा के दौरान छोटी यात्रा तथा स्वास्थ्य-समस्या होगी। राहु के कारण कुछ समस्या हो सकती है। गुरु की अन्तर्दशा के दौरान सुख और साझेदारों से लाभ मिलेगा तथा विवाह होगा। शनि के कारण बच्चों से सुख और विरोधियों पर विजय मिलेगी जबकि बुध की अन्तर्दशा में यश और ख्याति मिलेगी, जीवन में प्रगति तथा कार्यों में सफलता मिलेगी।

**अंतर्दशा :- केतु - केतु
(03/12/2029 - 01/05/2030)**

आपके लिए केतु महादशा 03/12/2029 को आरंभ हुई है। इस महादशा में पहली अंतर्दशा केतु की होगी जिसकी अवधि 4 मास 27 दिन रहेगी। आपके लिए यह 03/12/2029 को प्रारंभ होकर 01/05/2030 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी केतु मोक्ष, अचानक घटने वाली घटना और नाना का कारक है।

इस अवधि में आप लक्ष्यप्राप्ति के लिए दृढ़प्रतिज्ञा होंगे। स्पर्धियों से कष्ट हो सकता है। रिश्तेदारों से अच्छे संबंध रहेंगे। शत्रुओं पर विजय होगी, कर्ज से मुक्ति मिलेगी, नौकरी में मालिकों से लाभ होगा। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा।

आपके जीवनसाथी की यात्राएं हो सकती हैं, खर्चे बढ़ेंगे। आपके पिता सफलता प्राप्त करेंगे। माता में स्पर्धियों पर विजय पाने की संकल्पशक्ति होगी। आपके भाई-बहनों के लिए अचल संपत्ति, उत्तम शिक्षा और माता से मधुर संबंधों का संकेत है।

आपकी संतान की शिक्षा उत्तम होगी, उन्हें सब सुविधाएं उपलब्ध होंगी, मित्रों और भाइयों से मधुर संबंध होंगे। अगर वे कार्यरत हैं तो धन संचित होगा, प्रसन्न रहेंगे, सहकर्मियों से उत्तम संबंध रहेंगे।

अगर आप सेवार्त हैं तो पर्याप्त आत्मविश्वास होगा, आय बढ़ेगी, सफलता मिलेगी। परामर्शदाता भाग्यशाली रहेंगे। व्यापारियों के काम में कुछ परिवर्तन हो सकता है, यात्राएं होंगी, खर्चे बढ़ेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए उड़द, कंबल और तेल दान में दें।

**अंतर्दशा :- केतु - शुक्र
(01/05/2030 - 01/07/2031)**

केतु महादशा में शुक्र अंतर्दशा की अवधि 1 वर्ष 2 मास होगी।

इस अवधि में आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, प्रसिद्ध और सम्मानित होंगे। व्यापार में लाभ होगा, धनी बनेंगे। साझेदार या विरासत के माध्यम से धन और अचल संपत्ति का लाभ हो सकता है। घरेलू जीवन सुखी रहेगा। सब सुख-साधन उपलब्ध रहेंगे। उत्तम भोजन का रसास्वादन करेंगे। दान-धर्म के कार्यों में रुचि होगी। आपकी मधुर वाणी से लोग प्रभावित होंगे।

आपके जीवनसाथी धनी बनेंगे, उनका पारिवारिक जीवन सुखी रहेगा। आपके पिता के पास सब सुख-साधन उपलब्ध होंगे। माता भाग्यशाली रहेंगी, मित्रों से सहायता मिलेगी। आपके भाई-बहनों के लिए धन, शत्रुओं पर विजय, लोकप्रियता, सफलता और प्रसिद्धि का संकेत है।

आपकी संतान की शिक्षा उत्तम होगी। अगर वे कार्यरत हैं तो उनका जीवन

आरामदेह रहेगा, अचल संपत्ति प्राप्त कर सकते हैं, प्रसन्न रहेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो स्वयं के प्रयास से ही सफलता मिल जाएगी।
परामर्शदाताओं की आय अच्छी होगी। व्यापारियों को साझेदारी से लाभ होगा।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। अरिष्ट से बचाव के लिए लक्ष्मीजी की उपासना करें।

